International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

रायसेन से प्राप्त प्रचीन बौद्ध स्थलों का अवलोकन

आकाश मौर्य (एम.फिल. बौद्ध अध्ययन)
साँची बौध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय,
बारला, रायसेन, (म.प्र.)
मो. 9810893061
ईमेल- Akashmaurya12@gmail.com

वर्तमान समय में वैश्विक पटल पर बौद्ध धर्म अत्यंत लोकप्रिय है | इस धर्म का आविर्भाव 600 ई.पू. भारत में हुआ था | बौद्ध धर्म का उद्भव तत्कालीन समाज की विषमता व सामाजिक समस्यों के प्रतिक्रिया स्वरुप एक नवीन विकल्प के रूप में जन्मा | आगे जाकर कालान्तर में यह धर्म आम जनमानस में इस तरह लोकप्रिय हुआ कि अनेक शताब्दियों तक विभिन्न राज वंशों द्वारा राजकीय प्रश्रय प्राप्त करता रहा | जिसके फलस्वरूप बौद्ध धर्म सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में प्रसारित हुआ | इनमें मध्य भारत स्थित ***अवंति*** महाजनपद महत्वपूर्ण स्थान रखता था | इस महाजनपद को ***बेतवा (बेत्रवती)*** नदी दो भागों में विभक्त करती थी |

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

तत्कालीन भारत में आवागमन एवं व्यापार के विस्तार में ***उत्तरा पथ*** और ***दक्षिणा पथ*** का विकास भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में सिद्ध हुआ | सम्पूर्ण ***मज्झिममण्डल*** के चौदह महाजनपदों में बुद्ध वचनों के प्रसार में उत्तरापथ एवं दक्षिणापथ की भूमिका अभूतपूर्व माना जा सकता है | उत्तरा पथ ***राजगह, कौशाम्बी*** से ***गंधार*** जाता था | इसी प्रकार दक्षिणा पथ ***पाटन (गुजरात)*** से ***कलिंग (उड़ीसा)*** को जाते थे | ***अवंति महाजनपद*** का ***विदिशा*** नामक नगर इन दोनों राजमार्गों के चौराहे पर स्थित था | दोनों के संगम स्थल पर स्थित होने के कारण विदिशा उस समय एक मुख्य व्यापारिक केंद्र के रूप में प्रचलित था | इस तथ्य का उल्लेख ***सुत्तनिपात*** में इस प्रकार प्राप्त होता हैं कि 'अस्मक' देश के गोदावरी तट से मगध, वैशाली के रास्ते 'महिसमति' एवं 'उज्जैन', 'वैदिसा' तथा 'तुम्बनवन' को यह मार्ग जाते थे | ऐसा विवरण प्राप्त होता हैं कि इसी प्रकार ***समन्तपसादिका*** के अध्याय एक में ***"उज्जैनिय गच्छन्तो वेदिसानगर पत्वी"*** अर्थात उज्जैन जाते समय वैदिश नगर बीच में आता था |

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

'विदिशा' को पाली इतिहास में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता हैं | जिनमें ***वैदिसगिरी, वेसनगर, वैदिसनगर*** इत्यादि नाम प्रमुख हैं | बौद्ध साहित्य जैसे- *दीपवंस, महावंस, बुद्धवंस, समन्तपसादिका, महाबोधिवंस, जातक, अन्गुत्तरनिकाय, मज्झिमनिकाय* इत्यादि ग्रंथों में इस स्थान का वर्णन भिन्न-भिन्न प्रसंगो में प्राप्त होता है | इसी क्रम में ***दीपवंस*** एवं ***महावंस*** के अनुसार तीसरे मौर्य शासक ***अशोक*** द्वारा उज्जैन जाते समय ***'वैदिश'*** नगर में विश्राम किया और यही की एक शाक्य श्रेष्ठी कन्या ***'वेदिसा रानी'*** से अशोक ने विवाह किया | जिसके परिणाम स्वरूप इस नगर को राजकीय प्रश्रय प्राप्त हुआ और क्योंकि अशोक की नव विवाहिता बौद्ध धर्म की अनुयायी थी और कालांतर में अशोक के द्वारा भी बौद्ध धर्म में आस्था के कारण यह सम्पूर्ण स्थान बौद्ध धर्म के विकास के लिए मध्य भारत में सबसे अनुकूल स्थान के रूप में स्थापित हुआ |

दंतकथाओ के अनुसार वेदिसा रानी के द्वारा **'बौट पर्वत'**(वर्त्तमान साँची के पहाड़) पर सर्वप्रथम बौद्ध विहार की स्थापना कराई गई और बाद में अशोक के द्वारा साँची में स्तूपों का निर्माण कराया गया था | जिनमें 'साँची' विभिन्न बौद्ध

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

स्थलों का केंद्र बिंदु रहा | 'साँची' के प्रभाव स्वरूप यहाँ अन्य कई स्थल इसी के समीप के क्षेत्रों में विकसित हुए इन स्थलों का विकास कई कालक्रमों में हुआ | जिसमें मौर्य और शुंग वंश के समय *साँची, सतधारा, सोनारी, मुरैल-खुर्द, अंधेर, ग्यारसपुर* नामक स्थानों का विकास मुख्य रूप से देखा जा सकता हैं |

सर्वप्रथम बौद्ध स्तूपों का विवरण ***महापरिनिर्वाण सुत्त*** से प्राप्त होता है | तथागत गौतम बुद्ध के महापरिनिब्बान के उपरांत उनके धातुओं को आठ भागों में बाट कर उन पर स्तूपों का निर्माण किया गया | इन आठ स्थलों को ***महापरिनिर्वाण सुत्त*** में ***अटठमठानानि*** नाम से उल्लेखित किया गया है | इन स्तूपों का विकास मौर्य काल से दृष्टिगोचर होता हैं | इन स्तूपों का विकास कई कालखण्डों में हुआ, इसमे मौर्य काल के पश्चात् शुंग वंश का योगदान भी मुख्य माना जाता है |

दीर्घनिकाय के महापरिनिब्बान सुत्त में वर्णन किया है कि वज्जिसंघ में भीतर तथा बाहर चैत्यों(स्तूप) का मान करते थे | बुद्ध ने लिच्छिवियों द्वारा निर्मित स्तूप की भी चर्चा किया है-

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

"वज्जि चेतयानि अव्यतरानि चव"

भगवान बुद्ध ने स्वयं कहा की चक्रवर्तियों के अवशेष पर समाधि बनायीं जाए |

स्तूपों के प्रकार : - अध्ययन की दृष्टी से स्तुपो के 3 भागो में बाटा जा सकता हैं यथा- 1 . शारीरिक 2. उद्देशिक 3. परिभोगिक

1. **शारीरिक : -** जिन स्तूपों में बुद्ध के अवशेषों पर बनाया जाता हैं |
2. **उद्देसिक** : - उद्देश्यों से युक्त अर्थात किसी विशेष प्रयोजन को लेकर बनाया गया स्तूप को उद्देसिक स्तूप कहते हैं |
3. **परिभोगिक : -** बुद्ध के दैनिक जीवन में काम आने वाली वास्तुओं पर बने स्तूपों को परिभोगिक स्तूप कहते हैं |

रायसेन से स्थलों का संक्षिप्त विवरण :-

1. **साँची :–** मध्य भारत के सर्वप्रसिद्ध बौद्ध स्थलों में साँची के का नाम सबसे ऊपर आता है | 'वैदिस' नगर में मौर्य शासक अशोक द्वारा सर्वप्रथम बौद्ध स्थलों को स्थापित कराया गया | 'साँची' में मुख्य रूप से तीन स्तूप एवं कई संघारामों का विकास कई कालखण्डों में हुआ | इनमें मौर्य एवं शुंग शासनकाल प्रमुख थे | 'साँची' के स्तूप संख्या-01 अर्थात महास्तूप से

भगवान बुद्ध की धातु मंजूषा प्राप्त हुए | इसी प्रकार स्तूप संख्या-02 से तीन विभिन्न कालों के 10 अर्हतों की अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं | इसी क्रम में स्तूप संख्या-03 से भगवान बुद्ध के प्रिय शिष्य ***सारिपुत्र*** एवं ***महामोग्गलायन*** के धातु मंजूषा प्राप्त हुए है | सन 1989 ई. में (unesco) द्वारा 'साँची' के महत्व को देखते हुए इसे विश्व धरोहर घोषित किया गया |

2 **सतधारा : -** यह बौद्ध स्थल भोपाल-विदिशा मार्ग पर मुख्य सड़क से उतर कर कच्चे मार्ग पर करीब 7 कि.मी. अन्दर स्थित हैं | यह हलाली नदी के तट के समीप विंध्याचल पर्वत की तलहटी में हैं | इस स्थान की नैसर्गिक खूबसूरती को देखकर आगंतुक खुस हो जाते हैं | यह चारों तरफ से वृक्षों और पंक्षियों की आवाज एवं नदी के साफ़ जल के कारण यह स्थान अत्यंत मोनोरम लगता है | भारतीय पुरातत्व द्वारा यहाँ पर **32 स्तूपों** एवं कई संघाराम के अवशेष प्राप्त किये गये हैं | जिनमें 7 स्तूप वर्तमान समय में भी सुरक्षित हैं | 'सतधारा' से प्राप्त भग्नावशेष को देखने से ज्ञात होता है कि यह स्थल भी 'साँची' की भांति *थेरवाद शाखा* का केंद्र रहा होगा | यहाँ से

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

प्राप्त स्तूप संख्या-01, जिसे महास्तूप भी कहते हैं, 30 मी. ऊँचा, 30 मी. व्यास का अर्ध गोलाकार था | वर्तमान में यह स्तूप 9 मी. ऊँचा है | यह आज भी देखने में साँची के मुख्य स्तूप के सामान लगता है | स्तूप संख्या-02 एवं 07 का व्यास 20 मी. का है | यह स्तूप साँची स्तूप संख्या-03 की भांति यहाँ से ***सारिपुत्र*** एवं ***महामोग्गलायन*** की धातु व उत्कीर्ण अभिलेख भी प्राप्त हुए हैं | जो वर्तमान में लंदन के संग्रहालय में संरक्षित हैं | यहीं की एक पहाड़ी में कुछ भित्ति चित्र भी प्राप्त हुए हैं | सन 1989 ई. में जब (unesco) ने साँची के दौर पर थी, तब वह 'सताधारा' के महत्व को देखते हुए कुछ राशी 'सतधारा' के पुनरोत्थान में खर्च किया |

3 **सोनारी :-** यह स्थल भोपाल-विदिशा सड़क मार्ग से कुछ कि.मी. की दूरी पर सोनारी की पहाड़ियों पर स्थित है | यहाँ पहुँचना आज भी दुर्गम हैं | स्तूप सोनारी गाँव से 2 कि.मी. की दूरी पर पहाडों और जंगलों के मध्य में स्थित है | यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य अत्यधिक मनोरम हैं | इनमें 1 महास्तूप सहित कुल 8 स्तूप प्राप्त हुए और एक विहार एवं अन्य भग्नावशेष भी देखे जा सकते हैं | स्तूप संख्या-01 जिसे महास्तूप कहते है, वह 72 मी.

वर्गाकार आंगन में स्थित है | इस स्तूप का व्यास 14.4 मी. है | ये एक गोलाकर वेदी पर खड़ा था, जिसके आसपास वेदिका थी | संभवतः यह स्तूप पहले मिट्टी से बनाकर उस पर प्रस्तर खण्डों का आच्छादन किया गया था | यह वेदिका उदयगिरी के सफ़ेद पत्थरों से बने थे एवं स्तूप सोनारी के पत्थरों से निर्मित थे | यहाँ से 60 दान-दाताओं के नाम प्राप्त हुए हैं |

4 **मुरेल-खुर्द :-** यह स्थल विदिशा से लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित है | यह *मुरेल-खुर्द* नामक गाँव के समीप पक्की सड़क के पास एक पहाड़ी पर अवस्थित है | इस स्थान पर विशाल स्तूप समूह है | यहाँ से 37 स्तुपों के भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं | जिनमें से 12 से 15 स्तूपों को आज भी देखा जा सकता हैं और दो चौकोर प्रतिष्ठान के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं | जिन्हें शिद्ध का 'माकन' या 'महादेव' नाम से पुकारा जाता है, परन्तु यह बौद्ध विहारों के भग्नावशेष हैं | सम्भवतः यह स्थल मध्य भारत का एक मात्र ऐसा स्थान है जहाँ आज भी स्तूपों का सबसे बड़ा समूह देखा जा सकता हैं |

5 **अंधेर : –** यह विदिशा से लगभग 18 कि.मी. की दूरी पर स्थित है | यहाँ आज भी पहुँचना अत्यंत दुर्गम हैं | यह स्तूप अंधेर नामक गाँव के समीप एक पहाड़ी पर स्थित हैं | यहाँ वर्तमान में 3 स्तूपों के अवशेष प्राप्त हुए और एक संघाराम भी प्राप्त हुआ हैं | प्रमुख स्तूप 1.2 मी. ऊँची गोलाकार वेदी पर खड़ा था | उसका व्यास 10.5 मी. था | यहाँ से मौर्यकालीन बौद्ध भिक्षुओं के अस्थि अवशेष भी प्राप्त हुए हैं | यद्यपि विशेषज्ञों के अनुसार यह स्तूप संभवतः शुंग कालीन माने जाते हैं |

6 **ग्यारसपुर :-** यह स्थल विदिशा जनपद में जिला मुख्यालय से 50 कि.मी. की दूरी पर स्थित है | यहाँ वर्तमान में एक स्तूप प्राप्त हुआ है | जो संभवतः 7 वीं शताब्दी का मालूम होता है | यह स्तूप 'साँची' के स्तूप संख्या-01 के समान है, परन्तु आकर में उससे छोटा है | लेकिन स्वरूप में 'साँची' के महास्तूप के सामान ही प्रतीत होता है | इस स्तूप के तोरणों के भग्नावशेष यही बिखरे पड़े हैं |

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

उपसंहार : - बुद्ध कालीन समाज कई कारणों से महत्वपूर्ण रहा हैं | इसी काल में प्राचीन भारतीय राजतंत्र, अर्थतन्त्र और समाज का अपना वास्तविक स्वरूप निखरा | मध्य भारत से मिले स्तूपों को देखकर कहा जा सकता हैं कि तथागत के वचनों का प्रभाव उनके ना रहने के कई हजार वर्षो तक आम जन मानस में स्पष्टत: परिलक्षित होता है | इसे इन विहारों एवं स्तूपों के विकास से समझा जा सकता है | क्योंकि किसी भी धर्म व धार्मिक स्थलों का विकास राजकीय प्रश्रय और आम जनमानस द्वारा आस्था के बिना सम्भव नहीं हैं | मध्य भारत या रायसेन से मिले स्तूपों को देख कर यह बात सम्भव लगती हैं | अशोक ने जो 84000 स्तूपों की स्थापना का जो संकल्प लिया था, वह जरूर पूर्ण किया होगा |

-: सहायक ग्रन्थ :-

- शास्त्री स्वामी द्वारिका, अन्गुत्तरनिकाय, (अनु०) बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2009
- अर्थसास्त्र, कौटील्य, (अनु०) पं शास्त्री उदयवीर, प्रकाशक हेमचन्द्र लक्ष्मणदास लाहोर, प्रथम संस्करण 1928

- जातक कथाए – दशाण्, षडदन्त, अलम्बुस, सोम, महाकपि
- भिक्षु जगदीस कश्यप, दीर्घनिकाय, भाग दि०, प्रकाशन नव नालंदा महाविहार पटना, बिहार, दितीय संस्करण 1980
- कौसल्यायन, भदंत आनन्द(अनु०), महावंस, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण 1942
- मेघदूत -१/२३ - कालिदास
- भिक्षु जगदीस कश्यप, समन्तपसादिका, प्रकाशन नव नालंदा महाविहार पटना, बिहार, दितीय संस्करण 1964
- Marshall John,A Guide To Sanchi, Published By The Manager Of Delhi, Third Edi 1955
- Marshall John, The Monuments Of Sanchi Voll 1
- Alexander Cunningham, The Bhilsa Tops, Smith, Elder And Co, 65, Cornhall Bombay, First Edison 1858